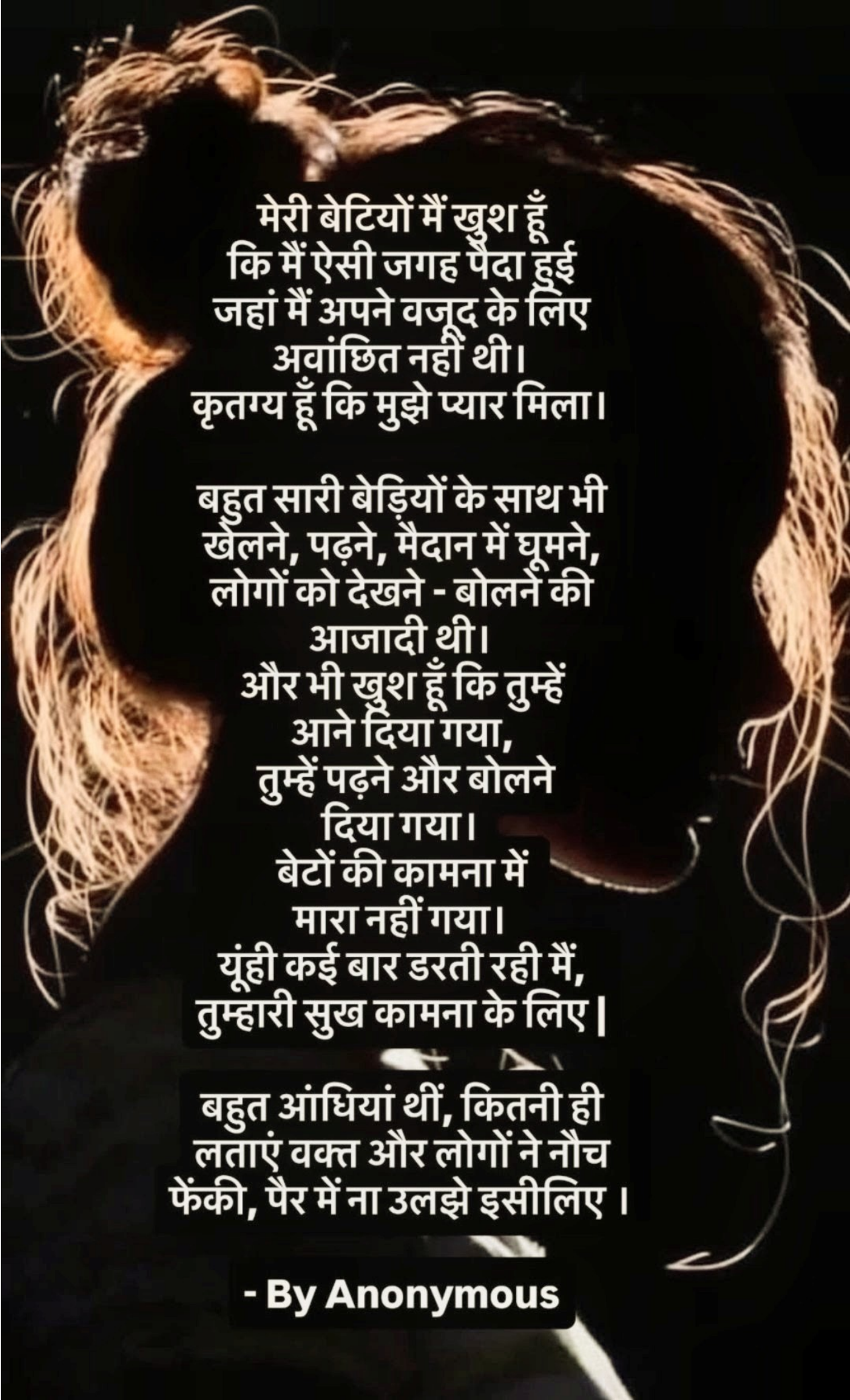
मेरी बेटियों मैं खुश हूँ
कि मैं ऐसी जगह पैदा हुई
जहां मैं अपने वजूद के लिए
अवांछित नहीं थी।
कृतग्य हूँ कि मुझे प्यार मिला।
बहुत सारी बेड़ियों के साथ भी
खेलने, पढ़ने, मैदान में घूमने,
लोगों को देखने - बोलने की
आजादी थी।
और भी खुश हूँ कि तुम्हें
आने दिया गया,
तुम्हें पढ़ने और बोलने
दिया गया।
बेटों की कामना में
मारा नहीं गया।
यूंही कई बार डरती रही मैं,
तुम्हारी सुख कामना के लिए।
बहुत आंधियां थीं, कितनी ही
लताएं वक्त और लोगों ने नौच
फेंकी, पैर में ना उलझे इसीलिए ।
- By Anonymous